



इतिहास का दर्द



# इतिहास का दर्द

रथजीत

की पिवने दस वर्षों की  
चुनो हुई पवास कविताएँ

नवयुग ग्रंथ कुटीर  
बीकानेर.

कापी राइट  
रणजीत, वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान)

प्रथम संस्करण  
दिसम्बर, १९६७

मूल्य  
५०० पैसे

क्योंकि रणजीत व पहलु काव्य-संकलन 'ये सपने ये प्रेत के तये संस्करण का अब इराग नहीं ह इसलिए उसको अधिवास महत्त्वपूर्ण छात्रों का उपयोग इस संकलन में कर लिया गया ह ।

मुद्रक  
विद्या-भारती प्रेस  
दीक्षापुर

## दृष्टिकोण

कैसे तो जो कृष्ण मुझे कहना है, मैंने इन कविताओं में कहा ही है और स्पष्टतापूर्वक भी कहा है लेकिन फिर भी, क्योंकि यह पुस्तक कोई प्रबंध कविता नहीं, पचास साठ स्वतंत्र कविताओं का एक सङ्कलन है, यह स्वामात्रिक ही है कि इसकी अलग अलग कविताओं में मेरे अर्थ तक क प्रनुभूत सत्य के अलग अलग लक्षणों और पक्षों को ही अभिव्यक्ति मिली हो। एक वृत्त को परिधि पर के इन अलग अलग बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा का काम मैं इन पक्तियों से लेने की कोशिश कर गा।

मैं अपने आपको 'कवि नहीं मानता, न 'कवि कहलाना ही पसन्द करता हूँ। यह मेरी नञ्जता नहीं है। वास्तव में मैं 'कवि' शब्द की प्रचलित धारणाओं के साथ अपने आपको समायोजित नहीं कर पाता। जब वे किसी को कवि कहते हैं तब साधारणतः लोगों का मतलब होता है

कि वह कोई मन्त्रद्रष्टा ऋषि है। भसीहा है। दिव्य शक्तियों से प्रेरित है। कि उसकी धारणा में सरस्वती या कोई और देवी-देवता या सब देवी देवताओं का गुरु घटाल स्वयं ईश्वर अभिव्यक्ति पाता है।

या कि वह कर्षों पर बना बिलेरे कोई अथ विलिप्त सा प्राणी है जो रात चलते किसी देह की छाया के पास लड़ा होता है कि कविता उसकी छाँकों से बुध्दाप उमड़ने लगती है। कि वह कोई सौंदर्य

प्रेमी कह्यना प्रीधी है, फूल खाता है और प्रोस पोता है ।

या कि वह तुकबाज है—शायु कवि । जहाँ किसी ने सलकार दिया देखे इसी घात पर हो जाय तुम्हारी एक कविता । वहीं तुके जोड़ कर सुना देता है । कि उससे चप्पल के टूटने और कुर्सी के गिरने से लेकर महात्मा गांधी के जन्म दिन और जवाहरलाल नेहरू की पुण्य तिथि तक किसी भी विषय पर उमो वक्त कविना लिखाई जा सकती है ।

लेकिन मेरे साथ मुश्किल यह है कि मैं न तो अपने आपको मसीहा मानने के मानसिक रोग से पीड़ित हूँ, न फूल खाकर और प्रोस पीकर जिवा रह सकता हूँ और न होली दियाती, पत्रह अगस्त और अन्धोस जनवरी पर साप्ताहिक पत्रों के सम्पादकों को ही पुग कर सकता हूँ । इसीलिये कहता हूँ कि मैं कवि नहीं हूँ मैं तो फक्त एक कविता लेखक हूँ । मैं कविता करता नहीं, लिखता हूँ । वह अपने आप बहती नहीं, मैं सोच समझ कर बहाता हूँ । कविता मेरे सामन अवचेतन का बन्दन नहीं अहम् का विस्फोट नहीं अपने या किसी के मनोरजन या रस प्राप्ति मात्र की चीज नहीं, अपने सामाजिक अनुपयोगिता के विरुद्ध अपने आपको प्रमाणित करने का प्रयत्न नहीं, एक मजबूत सामाजिक कथ्य है अपने घात पास के समार को और उसके साथ ही साथ खुद अपने आपको अपने सपनों व अनुकूल बनाने का एक प्रयत्न है ।





एक मित्रमेदार साहित्यकार को ये दोनों विरोधी से लगने वाले कतय एक साथ निमाने होते हैं। साहित्य की गतिशीलता के नाम पर अगर उसने वर्तमान से बाँधे मूँद लीं तो वह जीवन की गतिधर्मों से छिटक कर भ्रमों के देग में भटकने लगेगा। और अगर उसने तात्कालिक कतय के लिए अपने अधिक महत्वपूर्ण कतय को भुल्ला दिया तो वह उसकी अधिक गम्भीर समताओं का अनुपयोग होगा। सामयिक राजनीति में तटस्थ यह रह नहीं सकता जिसे प्रचार कहा जाता है, उससे बिल्कुल पिरत यह हो नहीं सकता पर साथ ही इसके कारण वह अपने दूसरे अधिक महत्वपूर्ण दायित्व को भी मूल नहीं सकता। एक और उसे बग सपय को बढावा देना होना है तो दूसरी ओर उस मवित्य के सपन पर भी नजर रखनी पडती है, जब मनुष्य और मनुष्य एक दूसरे के दुश्मन नहीं होंगे। यह एक दृष्टात्मक स्थिति है कि पहला काम उसे दूसरे उद्देश्य से प्रेरित होकर ही करना पडता है।

एक प्रगतिशील साहित्यकार की जिन्दगी एक निरन्तर सपय होती है। उस में बवल अपने बाहर के अपने समाज के सामन्तवाद और पूँजीवाज से लोहा लेना होता है। यदि साथ ही अपने अन्दर के सामन्ती और पूँजीवाजी मस्कारा और धारणाओं में मी नगा तार सडत रहना पडता है। जीवन को छोड़ी यात्रिक दृष्टि से अपने दान भाग साहित्यकार के कवल बाहरी— सामाजिक मयय का है और इसलिए उसी साहित्य को जो इन सपय में माया काम घाता है सदाधिक महत्व देना चाहते हैं। किन्तु अर्थात्क स्वयं साहित्यकार का मयय है उसके मानसिक मयय का महत्व भी कम नहीं है। क्योंकि उन्म जातत रहने के ब ड ही बाहरी मयय में वह अपना भूमिका सफलतापूर्वक घना कर सकता है। यह अपने दान है कि बाहरी सपय में भाग लेना मात्र कई बार अन्दर की मययों में विजय देता रहता है। दोनों मयय एक दूसरे के पूरक और एक दूसरे पर आधारित हैं। मैं इन मययों की मयय के दोनों पक्षों का स्थापान की कोशिश की है। इसका प्रमाण एक तरफ मरा मर गया ईश्वर और मेरी

कलम तुम्हारी किस्मत' जैसी कविताएँ हैं तो दूसरी ओर बिजले घाबरा घनती लायाएँ', 'ये मरने के प्रेन' तथा 'काउन्ट के कफेगन' जमी कविताएँ ।

पूजीवादी समाज में रहते हुए अपने आपकी मानववादी बनाए रखना एक बड़ा भाष्य साधना है, जो हर जिम्मेदार प्रगतिशील साहित्यकार का करनी पड़नी है । विचारों में पुरा मानववादी होकर भी वह अपने सामाजिक जीवन को अपने घाइनों के अनुकूल ढाल नहीं सकता [ क्योंकि मानववाद मरा मतमद बहानिब मानववाद मे हो है एक सामाजिक बगल है और कोई व्यक्ति उमका पूरा सामाजिक व्यवहार तक तक नहीं कर सकता जब तक कि पूरा समाज ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हो जाता या बाध्य नहीं कर दिया जाता । जब तक समाज व्यवस्था में परिवर्तन नहीं आ जाता तब तक व्यक्तिगत रूप से ऐसा करने की कोशिश निष्परिणाम गांधीवादी मूलता ही होगी । ] और जीवन में पूजीवाद व्यवहार का स्वीकार करके भी वह अपने मन की मानववादी घाइनों के प्रति निष्ठावान बनाए रखना चाहता है । यह एक ताल तनाव की स्थिति है और इसमें बन रहने के लिए उसे लगातार अपने परिवेश से और अपने अपने सङ्गे रहना पड़ता है ।

मेरी रचने के तीन प्रधान बन्द हैं साहित्य, साम्यवाद और स्त्रियाँ । स्पष्टता के लिए इन गण्डों के साथ एक एक विवेक और लगा डू मुदबिपूरा साहित्य सच्चा साम्यवाद और मुदर तथा इतिहासिक स्त्रियाँ ।

कविता में अनुभूति का स्थान सर्वोपरि है इस विषय में दो गण्ड नहीं होनी चाहिए लेकिन अनुभूति का मतलब हमें प्रत्यक्ष अनुभूति में हो नहीं होगा । कई बार अनुभूति किसी वास्तविक घटना या स्थिति के प्रत्यक्षीकरण की जगह किसी काह निक घटना या स्थिति के प्रत्यक्षीकरण की भी हो सकती है । फिर किसी डूमे की अनुभूत स्थिति में सरमण द्वारा भी उमकी अनुभूति समक है । अपने कविताओं की

स्वापेक्षिक स्थिति के माध्यम से ही यह अपनी 'बात कहती' है। गद्यों की एक व्यवस्था जो प्रभाव डाल सकती है जिन सबेगों को जगा सकती है हो सकता है उही गद्यों की दूसरी व्यवस्था उनकी न जगा सके। कविता की कविता बनाने वाली चीज यह या गद्य नहीं उसका अभिव्यक्ति का विशेष रंग और उसका रागात्मक प्रभाव है।

कविता में छंद सघन और तुक की दो साथ जाता है। एक तो ये कविता को स्वाभाविक दते हैं अर्थात् उसकी स्मरणीयता बढ़ाते हैं। और दूसरे ये उस स्थिति का उपकरण बनते हैं जिसे काइबेल 'गरीर गायत्राय अतमुखता' कहा है और जिसका बिना धोताओं की कविता के रङ्ग में रंग पाना असंभव है। अर्थात् छंद सघन और तुक का कारण कविता का धाता तन्मय होकर उसे सुनने लगता है उसके क्षेत्र से बाहर नहीं भटक पाना और इस प्रकार की शरीर गायत्रीय अतमुखता के वाक्य ही कविता अपने धोताओं पर अपना वांछित प्रभाव जमाना शुरू करती है। छंद सघन और तुक का दोना उपयोग कविता के प्रारम्भ काल में घन हो रहे हैं। आज भी कविता का एक बड़ा हिस्सा इन उपयोगों को सायक करता है। लेकिन अब कविता धार धार एक पाठ्यकता के रूप में भी विकसित जाना जा रहा है। प्रकाशित रूप में उसका स्वाभाविक अर्थ स्मरण पाना का काम उसका वाक्य का कथानिर्णय का अधिक माहताज जाना जा रहा है। इस प्रकार गद्य गायत्राय अतमुखता के पुनः उदरारणों का स्थान भी प्राकृतिक दृष्टि विविध गायक और उसके लक्षक के प्रति पाठक की पक्ष में बना हुआ धारणा उसकी प्रतिष्ठा घाटि तत्व में जा रहा है।

कविता अनुकान्त होकर भी वेतुकी नहीं बन जाती,  
सयहीन होकर भी विगृह्य नहीं हो जाती ।

कहने का मतलब यह है कि छंद, लय और  
तुक कविता के शिल्प के अवयव हैं और इनके निवाह  
से यदि वस्तु पर कोई आघात नहीं पहुंचता तो वह  
प्रशंसनीय है, पर यदि ऐसा नहीं हो सकता हो, तो  
इनका समाज शिल्प के अन्य अवयवों से पूरा किया  
जा सकता है, यही मेरी नीति रही है । न छंद का  
विशेष आग्रह है, न छंद हीनता । आग्रह है तो  
सिर्फ उस 'बात' का जिसे मैं कहना चाहता हूँ । और  
उसके लिए सब आप मरी कविताओं की ओर बढ़  
सकते हैं ।

## अनुक्रम

पान प्रता की बस्ती में	१७	य सपन य अत
रूना प्रतिमा	२०	प्यार चार अस्वाकृतिया
गयी साधना	२३	मेरे जात पास के लोग
मर गया स्वर	२७	एक रथ की सीख
सुन्दार निरा	३०	माध्यम
एक यरोजगार की प्राथना	३६	प्रोमथ्युस इतिहास की राह पर
मता बलम तम्हारी विस्मय	४१	एक यागी की स्वीकारोक्तिवा
सागो का दृष्टान्त	४४	समस्या
पाशा का अथगास्त्र	४८	मरेलिन मनरो का अंतिम पत्र
हार हुए सिपाही का वस्तव्य	५१	दल सनिर्वा से
बन में पास बगी एक बच्चों से	५४	सभीब विहीन यादवा का दद
साम जोर सपन	५७	रुफ एक बाल नहीं
प्यार दु गानन	६६	बफ पिघलन के बाल भी
एक मोरा	६१	इतिहास का याय
गृष्टभूमि	६४	सबदना से के निनिज
दुनिया एक बड़ा मनीन	६७	भूकम्प
आन यात विडाहियों के नाम	६८	आ परल
एक निर्याप	७०	बन्त गुरु गुजार हू
पाठक के कथन	७२	सुप्त नहीं है
प्यार अभी मन्त्रूर ह	७४	इतिहास का दल
नि पत्त	७६	जाहरो के व्यापार
एक हि दुस्तानी मठही जपन मन म	७८	मन्वा में क्या बल
मोनों का विश्राम	८०	कोई ह ?
एक विश्रान पत्रिका	८२	नय आवास
साम गुरु	८५	प्रतिपुति का मोर

इतिहास का दर्द



## पीले प्रेतों की बस्ती में

कभी कभी डर सा लगता है  
इस पीले प्रेतों की बस्ती में रहते रहते ही  
प्रेत न मैं खुद ही हो जाऊँ  
उन सब जिन्वा इन्मानों की तरह जिन्होंने  
पहले स्वर में  
मानवता की विजय-पताका फहराई थी  
किन्तु जिन्हें फुसला-फुसला कर

इतिहास का धर्म



घाँदी के इस चक्र-ग्रह में लाकर  
इन प्रेतों ने  
श्राज प्रेत ही बना लिया है ।

यों तो अपने पर मुझको विश्वास बहुत है, लेकिन  
श्रासपास की स्थितियों के प्रभाव की भी  
झुठलाना मुश्किल है  
ठीक है—  
इन्सानियत के प्यार को यह वृत्ति कुछ हल्की नहीं है  
कभी कभी पर  
नोटों के कागज भी कहीं अधिक भारी हो जाया करते हैं  
मन के गहरे विश्वासों को  
तन की भूल हिला देती है  
रोटी की छोटी सी कीमत भी कभी कभी  
इन बड़े बड़े श्रादर्शों को रेहन रख कर  
मिट्टी में गव मिला देती है ।

यदि ऐसा हो कभी  
कि उस ले पूजा का श्राजगर मुझको भी  
श्रांता के हाथों में भी बिक जाऊ  
मानवीय क्षमता, समता के गीत छोड़ कर  
श्रांतों का ही योगदान करने लग जाऊ  
तो श्राे धनना से बचे हुए जिंदा इंसानों ।  
मुझको मेर वे गीत सुनाना  
जो मैंने कस श्रांतों की इन्मान बनाने की लिखने से  
श्रांतों में सोपा इन्मान जगाने की लिखने से  
एक धीरे बिकते श्रादम —  
एक धीरे बनती छाया ८

उन गीतों की शक्ति तोलना  
हो सकता है  
उनकी गर्म सास फिर मेरे  
मुर्दा मन में प्राण फूक दे  
किरणों की अगुलिया उनकी  
चाँदी की पतों में दबे पडे  
इसानी बीजो को अ कुर दे जावें  
फिर से शायद  
भटका सायी एक तुम्हारा राह पकड ले  
और तुम्हारा परचम लेकर  
लडने को प्रस्तुत हो जाये—  
कभी कभी डर सा लगता है ?

## जूभूती प्रतिमा

नहीं रहा मैं अपने पय पर आज अवेला  
क्योंकि तुम्हारी भी आँखों में  
कल के विफल स्वप्न जागे हैं  
तुमने भी निमग्न होकर, अतीत के  
तोड़े सभी मोह-तागे हैं  
स्मृतियों में जीना तुमने भी छोड़ लिया है  
और धपकते वर्तमान का

तुमने भी विष-पान किया है  
ताकि भविष्यत के अपने सपनों को  
तुम भी सुधा सिक्त कर पाओ ।

समझ गयी हो तुम भी, इस मानव समाज के  
अनगढ़ शिलाखड के भीतर  
मूर्तिमान होने को जूझ रही जो  
प्रतिमा—

सब पाषाणी बाघ काट कर  
उसको बाहर लाना होगा  
मिट्टी की पर्तों में दबी हुई छटपटा रही जो  
एक अज-मी दुनिया की उस नयी पौध को  
हृदय-रक्त से सोंच हमें उमगाना होगा ।

सहमी सी नजरों से पर इस तरह न देखो  
सपनों के रखवाले केवल हम्हों नहीं हैं  
हम पर ही उमाद नहीं छाया भविष्य का  
जगती के सुख-दुख के मस्ते  
सिर्फ हमारे ही दिल पर के भार नहीं हैं  
हम-भजिल हैं बहुत हमारे  
जो नयनों में सपन  
दिलों में तपन  
सिरों पर षफन बाघ चलते हैं !

आओ हम भी जल्दी-जल्दी पर बढ़ाए  
अ धियारे के बँत्यों से जो लडे जा रहे  
नवयुग का ध्यज लिए हाय म बढ़े जा रहे  
रक्त बोज यो यो पर जो आगामी कल को

सात बिरण से मढ़े जा रहे  
उन लोह हरायल में चलने वाला से बरम मित्तार  
ताबि हमारी सचकी घाणों में जो दाये  
वे सघप -रत स्वप्न बभी गहने बन पाए ।

## नयी साधना

'बोधिवृक्ष' की छाया में हम भी बसे हैं  
हमने भी सोचा है, मनन किया है  
फिर पाया आलोक ज्ञान का  
अपने दीप स्वयं बनकर के  
'सुगति-भाग हमने भी दूँटा  
जगती के सुख-दुख के कारण  
और नियारण

हम भी समझे  
 बहुजन हित के लिए 'साध' की शरण ग्रहण की  
 युना रह हैं जा-जा की सबेरा साध का  
 घूम घूम कर  
 'पशु-वृत्ति' का विरोध हम भी करते हैं  
 फिर भी यदि अन्वेषण के परिणाम हमारे  
 गीतम से कुछ विलग रहे हैं  
 तो यह बात इसलिए कि गीतम ने केवल  
 एक बार जीवन देगा या  
 —प्राप्त होत कर—  
 जरा-मृत्यु के एक रूप में  
 इसलिये ये  
 जन्म-मरण के चक्कर को ही  
 दुख का मूल समझ बैठे थे  
 किन्तु हमारे आगे  
 अन्वेषी तरह जिन्दगी को जी सक्ने के सच्चे मस्ते हैं  
 लोगो की रोटो रोजी की  
 उत्तरी हुई समस्याएँ हैं ।

हमने भी यश किया 'इगला घौ' पिगला' को  
 प्राणों का समय हमने भी सोखा  
 —सास रोक कर हम भी करते रहे प्रतीक्षा—  
 युग युग से सोयी जीवन की 'कुण्डलिनी' को  
 साध, जगाकर किया उध्यमुख  
 लेकिन समझ गये जल्दी ही  
 अपना यह नाडी मडल तो बहुत सूक्ष्म है

इसीलिये तो

अपने से बाहर के जग की नाडी आज टटोल रहे हैं

आत्म-दमन तो युग-युग से करते आये हैं

किन्तु बाहरी रिपुओं की भी

—अधिक प्रबल जो—

ताकत आज बुजाओं पर हम तोल रहे हैं

डोल रहे हैं

मेहनत का तप और स्वेद की नस्म रचा कर

नगर-नगर में, गाव-गाव में

किन्तु ब्रह्म का नहीं

साम्य का 'असल' जगाने

क्योंकि आज हर साधक के सम्मुख

शून्य-गगन से धरा-मृत्यु पर आने के अतिरिक्त

नहीं पय कोई

टूटी बिगरी मानवता का 'योग' छोड़कर

कोई सम्यक् योग नहीं है।

हम भी झूम झूम कर गाते

मिलों-कारवानों-ज्वेलों में

गीत प्रीत के

'कस'-ध्वस के

'काह'-जीन के

वृंदावन की कुजगलिन में

जसे सूरज झूम रहा ही

'सखा-भाव की भक्ति' हमारी भी है

किन्तु हमारा काह

सूर के सत्ता इयाम से अगर भिन्न है



---

तो वह बस इमतिण जि मूर ने  
केवल एक न्याम को पहिनाना था  
और हमारी प्राणा प्राण  
साप-करोडो बाट गड है ।

## मर गया ईश्वर ।

“किस अभागो को मरे इस धूप में दफना रहे हो -  
और इसकी मौत पर क्यों खुशी से चिल्ला रहे हो  
कौन है ऐसा बिचारा, वो बता ?”

“मर गया ईश्वर, नहीं तुमको पता ?”

“मर गया ईश्वर ?

ईश्वर कि जिसने स्वयं अपने हाथ से धरती बनायी

## तुम्हारे लिए

मैं मनुष्य का गायक हूँ  
मनुष्य अपने तमाम रूपर गों और ढगों में मनुष्य ही  
मेरी कविताओं का विषय है  
और वही इनका उद्देश्य !

मैं मनुष्य का गायक हूँ  
सब मनुष्यों का !

मैं पीले भगोलों और काले हृदयों का गायक हूँ  
 लम्बे श्रायों और नाटे द्रविडों का  
 सम्य योरोपियो और असम्य अफ्रीकियो का  
 और उन सब का

जो आय और द्रविड  
 जर्मन और जापानी  
 बौद्ध और ईसाई कुछ भी नहीं हैं  
 सिर्फ मनुष्य हैं ।

सब लोग मेरे लोग हैं  
 और सब घरतिया मेरी घरतिया  
 वे बर्फ ओढ़े पहाड जिनका पहरा देते हैं  
 और वे  
 जो समुद्र के पेट म से पानी उलीच कर निकाली गयी हैं  
 वे जो गेरू उगाती हैं  
 और वे जो लोहा उगलती हैं  
 पेट्रोलियम के फव्वारे छोडने वाली  
 और लावे की आग बरमाने वाली  
 काली और पीली  
 लाल और भूरी  
 सब जमीन मेरी जमीनें हैं ।

मैं मनुष्य का गायक हूँ—

पूरे मनुष्य का ।

उसके शरीर और उसकी आत्मा का

उसके पेट की भूख और उसकी आँसों की प्यास का

उसके मन की उडानों और उसकी आत्मा की गहराइयों का

उसके अतीत, उसके बतमान और उसके भविष्य का ।

श्रीरामोपि विन्धी भाग्यमा न उन्मुक्त  
मुहावरों को रक्त रटा  
अपने प्रसन्न रिता को पागत या रहे ही  
धम के घेदूदा उपदगा को गा करत-करते  
अपनी घादनी राता पर स्याता पात र्ट हा  
तुम जो दृगिगत के नाम पर अगत पूजा  
अमगा पर अमपगात्र

## २० आने वाले विद्वाहियों के नाम

अगर कभी ऐसा हो  
कि मेरा मय सघष की गकियां लो बडे  
दूट जाय  
और झूठ की तरह निष्प्राण होकर राह पर गिर पडे  
तो आ निरंतर सघष गील सत्य को बहन कर  
मेरी राह पर मुझसे और आगे बढ़ने वाली !  
मेरे निष्प्राण सत्य की छाया से अभिभूत मत हो जाना—  
जसके मोह को काटकर आगे बढ़ जाना !

अगर कभी ऐसा हो  
कि मेरा विद्रोह जड़ता के सामने सिर झुका दे  
हार जाय  
और गुलामी के स्वीकरण की तरह निष्क्रिय होकर राह  
पर गिर पड़े  
तो ओ निरंतर प्रगतिशील विद्रोह को बहन कर  
मेरी राह पर मुझसे आगे बढ़ने वालो !  
मेरे निष्क्रिय विद्रोह की लाश से चिपके मत रह जाना—  
उसके सीने पर पाव रखकर आगे बढ़ जाना !

## एक निष्कर्ष

मीरा नहीं हो तुम  
न मैं ही हूँ तुम्हारा गिरिघर लीलाधाम  
तुम्हारे ओठ छूकर भी  
जमाने का जहर अमृत नहीं होता  
न मेरे चाहने भर से ही बनता है  
तुम्हारी ओर बढ़ता साँप  
गालिधाम ।

इमलिये



तुम जहर का प्याला उठा कर  
घाज राणा के ही होठों से लगाने के लिए  
भी कडा करती  
घोर धै ?  
यै अभी इस साँप का सिर कुचलता हूँ !

## फाउस्ट के कॉन्फेशन

अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए  
मैंने अपनी आत्मा को रेहन रखा था  
सोचा था  
कि जब फिर मेरे पास पर्याप्त शक्तिया हो जाएगी  
उसे छुड़ा लूंगा  
लेकिन मुझे क्या पता था  
कि ज्यों ज्यों मेरी शक्तिया बढ़ती जाएगी  
ग़मान का बज्र भी बढ़ता ही जाएगा

और आखिर जब मैं उसे छुड़ाने लायक हुआ  
मेरी आत्मा नीलाम हो चुकी थी ।

अपनी मिट्टी के बचाव के लिए  
मैंने अपने विद्रोह को सुलाया था  
सोचा था  
जब मैं फिर लड़ने लायक हो जाऊंगा  
उसे जगा लूंगा  
लेकिन मुझे क्या मालूम था  
कि वह अफीम जो मैंने उसे सुलाने के लिए दी थी  
उसके लिए जहर साबित होगी  
और आखिर जब मैं लड़ने लायक हुआ  
मेरा विद्रोह मर चुका था ।

उफ !

जिसे आपद घम की तरह स्वीकार किया था  
उसे जीवन दशन बनाने के लिए मजबूर हुआ ।।

अब मैं भटक रहा हूँ  
अपने आत्मा हीन अस्तित्व के कंधो पर  
अपने असफल विद्रोह की लाश रखे हुए  
ताकि देख लें मेरे हम सफ़र  
समझ लें  
कि किस तरह समझीता  
—एक सामयिक समझीता भी—  
विद्रोह को आत्मा को तोड़ देता है ।

## प्यार अभी मजबूर है !

सगातार चल रही है फरहाद की कुदाल, लेकिन  
बहुत बड़ा है अभी परम्पराओं का पहाड़  
फादना तो चाहती है शीरी की चाहें, लेकिन  
बहुत ऊँची है अभी सरमाये की दीवार  
बदों के साथ जाती हीरो की चीखें अभी  
चुभती ही जा रही हैं राक्षो की रूहो मे  
खोजना ही फिर रहा है मजनू अभी लला को  
चादी की रेता के चलत फिरते दूहा म

पेड़ पर टका पड़ा है मिर्जों का तरकस अभी  
 साहिबा की प्रायना बेकार होती जा रही है  
 डाढ़ो सी चल रही हैं महीवाल की बाहें, लेकिन  
 व्यवस्था के बफानी सत्राटे में  
 सोहिनी की डूबती पुकार खोती जा रही है  
 रस्मों की उमड़ी हुई चिनाव में  
 गल रहा है प्यार का कच्चा घड़ा  
 किनारा अभी दूर है—  
 प्यार अभी मजबूर है !

## विष-पुरुष

पास मत आओ मेरे  
मुझसे न पूछो बात कोई  
मत बढाओ हाथ मेरी ओर तुम सम्पक का—  
मैं विष-पुरुष हूँ ।

बहुत सकामक दृष्टा करते हैं नीले जहर के कीड़े  
कहाँ ऐसा न हो  
इम जहर की सहर

तुम्हारी धमनियों के रक्त में भी उमडने लग जाय  
आग

अन्तर में दबाए हूँ जिसे मैं  
झपट कर कोई लपट उसकी तुम्हे छले  
कि वे चिगारिया जो  
युगो से सोयी हुई हैं सद सासो मे तुम्हारी  
आज फिर जग जाय  
इसलिए मुझसे बचो

ओ वतमान को ज्यो का त्यो स्वीकार

जि दगो जी लेने की बात सोचने वालो !

आजकल विष बाटता हूँ मैं ।।

एक हिन्दुस्तानी लडकी,  
अपने मन से

मुन रे मेरे मन !  
इतना मन तन  
पहले इमर बेल  
फिर करना मीम-मैल  
तुन, यह है तेरा पति  
इमके सिवा नहीं तेरी गति



इसको कर प्यार  
 अपने को मार  
 हिम्मत न हार  
 फिर कोशिश कर एक बार  
 आखिर इसी से काम  
 या करेगी अपने पुग्गों का नाम ?

देख, अपने देश का तो ढग ही यही है  
 सदा से यही रीति चलती रही है  
 कि पहले किसी से भी शादी करो  
 फिर अपने जो हिस्से आये, उसी पर मरो  
 तू भी मरना सीख  
 तुझसे मैं मांगती हूँ भीख  
 आखिर इस विचारे में कौनसी बुराई है  
 मा-बाप ने देख सुनकर ही आखिर तुझे ग्याही है  
 फिर अंगूठ को किसी न किसी मद से तो झुकना ही पडता है  
 तब किसी से झुकने में क्या फरक पडता है  
 सोचले अब तू बस इसकी परिणोता है  
 यह राम है तेरा, तो तू इसकी सीता है  
 पर यह राम हो या न हो, तुझे सीता रहना है  
 इसका ही होकर रहना है, अगर जोता रहना है  
 भले घर की लकड़ियों का यही है ढग  
 जैसे कासी कागरी पड़े न झूओ द ग ।

## लोगों का विश्वास

अब तक मैंने मुना हृदय में  
बस सपनों का ताना बाना  
अब तक मेरा काम रहा है  
लोगों तर सपने पढ़ाना  
अब उसके अनुकूल सत्य का जी न सका तो  
लोगों का विश्वास सपन से उड़ जायेगा।

अब तक केवल लिखने में ही

मैंने अपनी शक्ति लगायी  
दुनिया के बेहतर ढाँचे में  
लोगों की आसक्ति जगायी

अब यदि उनके सघनों में उतर न पाया  
लोगों का विश्वास कलम से उठ जायेगा !

## रुक विराट् पवित्रता

ठहरी रहो,  
घपनी इन मृणाली बाहों से मुझे घेर कर इसी तरह  
ठहरी रहो ।  
जब तक कि तुम्हारे रोम रोम से यह अज्ञात समय सांठों  
से रहा है  
जब तक तुम्हारी धारों में उसकी नीली गहराइयाँ हैं  
तुम्हारे गाल उसकी रोगनी से से रोगन हैं  
तुम्हारे होठों पर उमका म्वाद है

तब तक मुझे घेरे रहो  
 उस विराट पवित्रता से मुझे ढूँए रहो  
 क्योंकि कुछ ही क्षण बाद  
 अपने आप तुम्हारा आतिगन ढीला पड जाएगा  
 और हम दो टकराकर कौंध चुके बादलों की तरह  
 अपने अपने घायल अस्तित्व को देम रहें होंगे  
 और सोच रहें होंगे  
 कि क्यों अब हमारी निकटता विजनी नहीं चमकाती  
 और तब  
 तुम्हारे चेहरे पर उभरती हुई मुस्कान में मुझे बनावट  
 नजर आएगी  
 और मेरे लहजे में निकलनी हुई अभिमान की गंध  
 तुम्हें असह्य लगने लगेगी  
 हम फिर स्वयम के छोटे-छोटे घेरो में घिर कर रह जाएंगे  
 फिर तुम मेरे लिए निये गये अपने त्याग का हिसाब  
 करने लगोगी  
 और मैं तुम्हारे लिए मुनी हुई प्रनाडनाए गिनने लगूंगा  
 तुम मेरे किसी दोस्त की नकल निकासोगी  
 और मैं तुम्हारी किसी सहेली का मजाक उडाऊंगा,  
 फिर यही तेन देन  
 हिसाब किताब  
 शिक्षा गिफायत  
 शायद हमारी खुद आरमाए  
 उस विराट की अधिष बेर तब घारे नहीं रह सकतीं  
 इसलिए जब तक तुम्हारे रूप में गिरीय के पून लिले  
 तुम्हारे बेगों में रातरानी की गुगलू है

दृष्ट हैं

तुम्हारी सासो में इंसानियत की गर्मी है  
तब तक ठहरी रहो,  
अपनी इन मृणाली बाहो से मुझे इसी तरह घेर कर  
ठहरी रहो !

## लाल खून

बहुत ठण्डी होती हैं हालात की बर्फानी पतें  
साल खून भी तो लेकिन कम गम नहीं होता !

## ये सपने • ये प्रेत

मुझे घेर कर खड़े हुए हैं मेरे सपने ।  
क्षण भर के भी लिए धन की सास नहीं लेने दत हैं—  
दामन पकड़े अडे हुए हैं मेरे सपने ।  
मैं इनसे अभिभूत जुल्म के अ गारा पर चल लता हूँ  
मैं इनसे आविष्ट आधिया-तूफानों में पल लेता हूँ  
प्रेता से ये मेरे सिर पर चढ़ हुए हैं मेरे सपने ।  
मुझे घेर कर खड़े हुए हैं मेरे सपने । ।

मरने जिनरो जन्म दिया था मने



दुनिया की तीखी नजरों से टिपा बचाकर

पाला था

पोसा था

बडा किया था

शत्रु मुझमें आकर मागते

जीने का

सब बनने का अधिकार मागते

जमें किसी गरीबिन मा के भूये बन्दे

उसका आचल खींच-खींच कर

माग रहे हो उससे रोटी—

ऐसे पीछे पडे हुए हैं मेरे सपने !

मुझे घेर कर लडे हुए हैं मेरे सपने !

क्षण भर क भी लिए चन की सारा नहीं लेने देते हैं—

दामन पकडे अट हुए हैं मेरे सपने !!

कभी कभी मेरा हारा मन

दुनिया के सार नियमा से समझाता कर

सीधे सादे डरों से जीवन जीने की

बात सोच लेता है, लेकिन

ये भ्रवध जनघादी सपने

सघर्यों के आदी सपने

सब समझाते तुडवाते हैं

और मुझे हर जोर जुल्म के

बेइसाफी के तिलाफ ये

बाह उठा कर लडवाते हैं—

ऐसे पीछे पडे हुए हैं मेरे सपने !

मुझे घेर कर खडे हुए हैं मेरे सपने ।  
क्षण भर के भी लिए घन की सांस नहीं लेने देते हैं—  
दामन पकडे भ्रडे हुए हैं मेरे सपने । ।

## प्यार . चार अस्वीकृतिया

प्यार कोई किसी अल्पवार का मट्टीमोनिपल अँ डयरटाइज-  
मट्ट घाना कौलम तो नहीं है

रि उमके माध्यम में

किसी अल्ले में पनि या किसी अन्टो सी पत्नी को खोज  
को जाय

और अपनी मफनना पर बधाइया पाई जाय ।

प्यार कोई व्याजमायि- फम या फट्टी तो नहीं ह

कि उसके शेयर खरीदने से पहले  
उसके नफे नुकसान का पूरा अंदाज लगा लिया जाय  
और अपनी बुद्धिमानी पर गय किया जाय ।

प्यार कोई प्रतिष्ठा क लिए लडी जाने वाली वस्तु तो  
नहीं है

कि अपने स्टैटस के पहलवान से ही लडी जाय  
और उसकी हार पर मिठाइया बाटी जाय ।

प्यार कोई किसी प्रतिभोगिता का प्रथम पुरस्कार तो  
नहीं है

कि सबसे ज्यादा नम्बर पाने वाले को ही दिया जाय  
और अपनी धायशीलता पर तालिया सुनी जाय ।

## मेरे आसपास के लोग

मेरे आसपास बड़े सभ्य लोग रहते हैं ।  
ये, जो पानी को तो कई कई बार धोते हैं,  
पर जहरीली परम्पराओं को आँखें मीच कर पी जाते हैं ।  
रोटी की पवित्रता का तो पूरा पूरा ध्यान रखते हैं,  
पर सिद्धांत जूठे ही खा लेते हैं ।  
सम्झो तो हमें ताजी ही काम में लाते हैं,  
पर घादग बागो ही अपना लेते हैं ।  
बपड़े तो \_द गिल्लिया कर ही पहनते हैं

पर विचार रेडीमेड ही गरीब लेते हैं !  
मकान तो अपना बनवाया हुआ ही पसंद करते हैं,  
पर विश्वास किराये पर लेकर ही काम चला लेते हैं !  
फिल्म तो अपनी पसंद की ही देखते हैं,  
पर शादी अपने माँ बाप की पसंद से ही कर लेते हैं !  
कितने सभ्य हैं मेरे आसपास के लोग !

## रुक गधे की सीख

देख, बेटा, देख ।

जरा जमीन पर पाउ देख

इतना मन उछल, हवासे मत ना

अपनी श्रीशान तो बन, जरा हों में तो आ

देख, दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं

कुछ का धोना होता है, कुछ टोत है

दोने यात्रे कुत में तूने जान लिया है

दोने घाली दम्मा का दूध पिया है

दूध की इस शान को लजाना न सीख  
गरदन को ऊंची उठाना न सीख  
सुन, मेरी बात जरा ध्यान से त सुन  
सहनशीलता गधो का सबसे बड़ा गुन  
अपने पुरख हमेशा से बफादार रह है  
त्याग और तपस्या के भडार रह है  
पुरखो की परम्परा को तोड मत बेटा  
अपने फर्जों से मुख मोड मत बेटा  
मत देख पराई हलुवा पूडी मत लतचा तू जी  
रखी सूखी खाय के ठण्डा पानी पी ।



## माध्यम

मैं माध्यम हूँ ।

मैं उन सबको भटकती हुई आत्माओं का माध्यम हूँ

जो झूठे और झटुम भर गये

मेरे कंठ में उनके स्वर हैं

जिन्होंने सारी जिन्दगी निःशब्द गुज़ार दी

मेरी कसम में उनकी घाग है

जो अपनी घाग अपने दिलों में दबाए हुए भी बहती है

मेरे गीतों में उनका विद्रोह है

जिनकी गदनें उठने में पहले ही चुका दी गईं  
यह मैं नहीं उतरी आत्माएँ भोग रही हैं ।

जब मैं बोलने के लिए प्रयास मुह खोलना हूँ  
कुछ भटकते हुए शब्द मेरे आसपास मडराने लगते हैं  
ये उस अंग्रेज लेखक रिस्टोफर क्राडवेल के शब्द हैं  
जिसने स्पेन की आजादी की लड़ाई में अपनी जिदगी दे  
दी थी  
मे इटली के उन मकड़ों कातिकारी सैनिकों के  
शब्द हैं

जिह भाप बनाकर उठाने के लिए  
नाज़ी गेस्टापो के हाथों सौंप दिया गया था  
ये पोलैण्ड के उन हजारों मृत यूनियनों के शब्द हैं  
जिह जिंदा दफनाने के लिए  
सुद उठने के हाथों से उन्हें सुदवाई गयी थीं  
ग्रामविटज के गसचेध्वरो में घुटी हुई ये लापते आवाजें  
१२५ अंग्रेज सुले आसमान में विचर कर लोगो के कानों तक  
पहुँचना चाहती हैं ।

मैं माध्यम हूँ ।

जब मैं निपटने के लिए अपनी कलम उठाना हूँ  
एक आग मेरी कलम को घेर कर लपटी हो जाती है  
अब आग अन्धकार की उस जवान विधेहिणी जमीना  
की आग है

अमानुषि-अत्याचारों के चल पर  
जिसने ये सब अन्धकार फैलाए गये हैं  
जो उमरत की गहरी गिर

यह सीक्रेट ग्रामों की शिकार उन हजारों-श्रद्धालुओं की श्राग है  
मदालों की श्राग है

-जिनकी जिन्दगिया

क्रासिसी साम्राज्यवादियों की नजरों में  
बोड पर लिखी हुई सत्याग्रहों से ज्यादा कीमत नहीं रखतीं  
यह श्राग चाहती है कि मैं इसे कागजों के पृष्ठों पर उता-  
रता जाऊ  
श्रीर कागजों के पृष्ठों से वह लोगो के दिलो तक पहुँचती  
जाय ।

मैं माध्यम हूँ

दूटी हुई आवाजा श्रीर दबी हुई चिनगारियों का माध्यम ।

जब मैं अपना साज सभालना हूँ

एक दर्द मेरे आमपाम आकर जमने लगता है

यह कागो के बेनाज वादगाह लुमुम्मा का दर्द है

जो मेरे माज को उदास और मेरी आवाज को गमगीन  
बना रहा है

यह कागो की गाजादी के उम गिनाही का दर्द है

जिसे निहत्या करके गोरी मार दी गयी

श्रीर कागो के जमे हुए रून में एक उबाल भी न आया ।

मैं जब अपनी पलक उठाना हूँ

कृष्ण घायल श्रीर बेतरकीय शब्दों को अपने आत्मपाम  
मडगते हुए पाता हूँ

ये संलगाना के उम लूटे विमान के गपने हैं

जिमने जमीनो पर जीने वागो का अधिकांश चाहा था

श्रीर इसके इत्तम में जिमने हाथ पर काट लिये गये थे

ये उन एक सौ आठ चागी किसानों की पलकों के सपने हैं ।  
जि होने अपनी पकनी हुई फसल और जवान होती हुई  
बेटियों को

लुटेरे हाथों से बचाने के लिए  
बढ़कें उठा ली थीं  
और जिनकी पलकों फाँसी के तरता पर लाकर मूँद  
दी गईं

ये नरगाना के उम न हे से विद्रोही गात्र की  
संकड़ो स्त्रिया और बच्चों के सपने हैं  
जिसे हिंदुस्तानी सरकार के बहादुर सिपाहिया ने घेर कर  
आग लगा दी थी

ये सपने चाहते हैं  
कि मैं इन्हे दुनिया के एक एक इंसान की पलकों तक  
पहुँचा दूँ !

मैं माध्यम हूँ  
बेनाम दलों और घायल सपनों का माध्यम !

जब मैं सोचना चाहता हूँ  
एक भयानक पागलपन मेरे दिमाग को चारों ओर से जकड़  
लेता है

यह उम अमेरिकी पागलपन का पागलपन है  
जिसे हिरोशिमा पर एटमबम गिराने का आदेश दिया  
गया था

और जो उम भीषण नरमेज का प्रायश्चित्त  
अमेरिकी पागलपन का सपना है  
यह पागलपन यात्रु है  
कि मैं इन्हे दुनिया के हर जगजाज नेता

और उसके हर वफादार सिपाही के दिमाग तक पहुँचा दूँ !

मैं माध्यम हूँ

और जब ये शब्द, यह आग और ये सपने मेरे आसपास  
मडराते हैं

मैं अपने क्षुद्र से व्यक्तित्व को भूल जाता हूँ

और मुझे लगता है कि मैं ही वह अग्रेज लेखक हूँ

अल्जीरिया जमीला हूँ

मैं ही रबर की तरह जमी हुई कागो की आत्मा को

हिलाने की कोशिश करने वाला लुमुम्बा हूँ

आग में जिंदा जलती हुई स्त्रियों और बच्चों की ये दद-  
नाक चीखें

मेरे ही भीतर में उठ रही हैं

मैं ही वह पवित्र पागलपन से आक्रांत अमेरिकी पापलेट हूँ

ये सब मेरे ही भीतर जी रहे हैं

मैं माध्यम हूँ !

## प्रोमैथ्यूस इतिहास की राह पर

पुराणों में एक प्रोमैथ्यूस था

जिसने स्वर्ग से अग्नि चुरा कर मनुष्य को दी थी

श्रीर देवनाग्रा के राजा जुपीटर ने उसे एक चट्टान से  
बधवा दिया था

इतिहास में भी प्रोमैथ्यूस हाते हैं

लेकिन इतिहास में अग्नि चुराना श्रीर चट्टान से बधना  
जहरी नहीं है

क्योंकि बहुत से प्रोमेथ्यूस तो आग चुराते नहीं, छीनते हैं  
 जुपीटर के द्वारा बंदी नहीं बनाये जाते, उसे हरा कर भगा  
 देते हैं  
 और आग के साथ ही साथ जुपीटर के महलों के भी  
 मालिक बन जाते हैं  
 तब उन्हें आग धरती पर ले जाकर मनुष्यों को देने की  
 जरूरत नहीं रहती  
 वे खुद स्वर्ग में ही आकर रहने लगते हैं  
 और आग  
 फिर इन नये जुपीटरों के महलों में बंद छटपटाती रहती है  
 और धरती  
 —अधेरे में भटकती हुई व्याकुल धरती—  
 फिर किसी नये प्रोमेथ्यूस का इन्तजार करती रहती है ।

## रुक बागी की स्वाकारोक्तिया

नरुत है मुझे अपने दग से  
जहा बचपन नीव मागते हुए जयान होता है  
और जवानो गुलामी करत-करते बुढ़िया जाती है !

जहा अघाय को ही नहीं  
आय को भी अपनी स्थापना के लिए  
मिन्दारिगों को जहग्न होनी है  
और झूठ ही नहीं



सच नी रोटरी मगीनो और लाउडस्पीकरो का मुहताज है  
 बईमानी को ही नहीं  
 ईमानदारी को भी अपनी रक्षा के लिए  
 पैसों की ताकत का सहारा लेना पड़ता है ।

जहा प्राति की योजनाओ जसे उल्लास भरे प्रारम्भ वाले  
 प्यार का अन्त  
 किसी निकटतम साथी के मृत्युदंड का सा अवसादपूर्ण  
 होता है  
 और भोर के टटके गुलाब की सी ताजा सुकुमार सुंदरता  
 सीलन-नरी अघेरी कोठरियों में घुट घुट कर बुझ जाती है ।

जहा पुस्तक-गर्भो अ गुलिया  
 बनन माज-माज कर घिस जाती हैं  
 और स्पुतनिक बना सकने वाले दिमाग  
 पत्यर ढो-ढो कर भंडे हो जाते हैं ।  
 जहा पृथ्वी की परिश्रमाए कर सकने वाली बेलत्तिनाए  
 भारी जेबों और ऊबो कुर्सियों के आसपास भिनभिनाने  
 वाली  
 कीलरे बन कर रह जाती हैं ।

नफरत है मुझे अपने धम से ।  
 मेरा धम पत्यरों और पोथिया के आदेशों का धम है  
 फटे हुए कानों और नुचे हुए कंगों का धम है  
 जिंदा जलायो हुई सनिया और यथियाए हुए सयासियों  
 का धर्म है  
 मुझे नफरत है अपने मठों और मंदिरों से

जहा आतक और अज्ञान को मूर्तियों में ढाल कर पूजा  
 जाता है ।  
 नफरत है मुझे मिमियाते हुए होठों और जुड़ते हुए हाथों से  
 नफरत है मुझे घिसती हुई नाकों और झुकते हुए माथों से !  
 नफरत है मुझे अपनी सरकार से  
 जिसने रोटियों और भूखे हाथों के बीच पहरे लगा रखे हैं  
 कपड़ों और ठिठुरते हुए शरीरों के बीच  
 लक्ष्मण रेखाएँ खींची रखी हैं  
 खाली मकानों और बेघरबार लोगों के बीच  
 दीवारों खड़ी कर रखी है  
 रोगियों और दवाओं के बीच फटीले तार लगा रखे हैं  
 और खिताबों और लोगों की आँखों के बीच  
 अंधेरे फला रखे हैं !

हा, मैं बागी हूँ  
 मुझे अपने देग, अपने धम और अपनी सरकार से नफरत है  
 मैं बागी हूँ क्योंकि मुझे अपने लोगों से प्यार है  
 मैं इनके चेहरों पर बहार, इनके आँगनों में त्यौहार देखना  
 चाहता हूँ  
 मैं बागी हूँ, क्योंकि मुझे उन जजीरों से नफरत है  
 जो इन्हें जकड़े हुए हैं,  
 उन सीमाओं से नफरत है, जो इन्हें बाँधे हुए हैं !

## समस्या

बद बड़ा है  
गीत हैं ओछे  
पूरा बंद नहीं कह पाते ।  
प्यार बड़ा है  
मीत हैं ओछे  
पूरा प्यार नहीं सह पाते ।

## मॅरेलिन मनरो का अन्तिम पत्र

सुनो,

सो दुनिया के सभसे सम्पन्न और सभसे सम्य देश के भद्र  
नागरिको,

सुनो !

मैं जो प्रबन्ध निक तुम्हारे एयर-स्ट्रीमिंग टाकीजों  
के पदों

या किन्मी प्रबन्धों के र गीन पृष्ठों पर से ही बोलती  
रही हूँ

मैं जो अबतक ओढ़े हुए व्यक्तित्व ही तुम्हारे सामने रखती  
रही हूँ

निर्माताओ निर्देशको-सवादलेखको के शब्द ही  
तुम्हारे सामने दुहराती रही हूँ  
आज तुम्हे अपने ही दिल और दिमाग से निकले हुए  
अपने ही शब्दों से संबोधित कर रही हूँ ।

मुनो, ओ अमेरिका के कला ममज फिल्म निर्माताओ,  
निर्देशको, आलोचको और दशको ।

तुमने मुझे हमेशा नॉद की गोलिया दी हैं ।  
मेरी चेतना, मेरे बिबेक, मेरे अहसास को सुलाया है  
मेरे नारीत्व, मेरे व्यक्तित्व, मेरी आत्मा का होश छीना है  
और मेरी भूल, मेरी प्यास, मेरे स्तनो और मेरे नितम्बो  
को उभारा है  
मेरे होठो के र ग और मेरे बक बेलेंस को शोखी दी है—  
मेरे शरीर को जगाया है ।  
इस शरीर को, जिसने अब मुझे पूरी तरह से लील लिया है  
यह शरीर जो अब मेरे व्यक्तित्व का एक अंग नहीं,  
उसका दुश्मन बन गया है ।  
और आज मैं इसे उन्हीं नॉद की गोलियो से सुला बूगी  
जिनसे तुमने मेरी आत्मा को सुलाया था ।

ओ मेरे अपने देग और दूसरे देगा के मेरे प्रगसको ।  
मेरे सौंदर्य के घाटको । मेरे अभिनय के सराहको ।  
मेरी तारीफ म छपी हुई तुम्हारे अजबारों की सतरे  
तुम्हारे कलेण्डरों म टकी हुई मेरे नो शरीर की तस्वीरे  
मेरे नाम पर भरी हुई तुम्हारी आहें

मेरे उभारो पर भिनभिनाती हुई तुम्हारी आँखें  
 मेरे हीठो की ओर फँके हुए तुम्हारे चुम्बन—  
 ये सब मेरे आसपास इस तरह मडरा रहे हैं  
 जैसे किसी गढ़े अधसूखे नाले के कीचड़ में पडो  
 किसी इंसान की लाश के आसपास  
 घिनौनी मक्खियाँ, जोंकें और कोंकड़े मडरा रहे हो  
 और यह सब मेरे लिए असह्य है !

ओ व्यक्तिगत स्वतंत्रता का डिठोरा पीटने वाले मेरे देश  
 के रहबरो !

मैं राजनीति नहीं जानती  
 समाज और व्यक्ति के उलझे हुए सम्बन्धों को नहीं समझती  
 पर एक सीधी सी बात पूछती हूँ  
 कि उन सब के लिए  
 तुम्हारी इस व्यक्तिगत स्वतंत्रता का क्या मतलब है  
 जिन्हें तुमने व्यक्ति बनने का मौका ही नहीं दिया ।  
 तुमने मुझे मात्र एक शरीर बना कर रखवा ।  
 एक शरीर जो लूबसूरत है, जवान है, भोग्य है  
 एक शरीर जो किसी की माँ नहीं, बहिन नहीं, बेटा नहीं  
 किसी की पत्नी, प्रेयसी, मित्र कुछ भी नहीं है  
 मरज एक शरीर—  
 सतीस तेईस का एक माडल !

मेरी टेबिल पर कपड़े का दाँव लिली पडे है  
 एक बाघ है और एक ममना  
 कल हो मैं इन्हें खरीद कर लाई हूँ  
 किन्ना भयानक, कितना खूब्यार है यह बाघ

श्रीर कितना मासूम, कितना निरीह है यह मेमना !  
 पता नहीं क्यों यह विचार मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा है ।  
 कि यह मेमना मैं ही हूँ  
 और यह बाघ ?

— इस मासूम मेमने को निगलने वाला यह बाघ ?—  
 मैं सही शब्द चुनना नहीं जानती  
 शायद यह तुम्हारा फिर्म उद्योग है  
 शायद तुम्हारे बाजार और बक हैं  
 शायद शायद तुम्हारे समाज का यह ढाँचा है !

रात उदास है  
 और खिडकियों पर जमती हुई बर्फ की फुहार में  
 किसी रहस्यपूर्ण पद्यन्त्र की फुसफुसाहट है  
 मेरा सिर नींद से नारी हो रहा है  
 अब मेरे पास सिर्फ एक गोली बची है  
 आखिरी और छत्तीसवाँ गोली ।  
 और इसके बाद मैं गहरी नींद में जाऊँगी  
 ऐसी नींद, जिससे मुझे कोई न जगा सकेगा !

मैं तुम सब की आभारी हूँ, ओ मेरे देव वासियो !  
 मैंने इन छोटे से जीवों में बहुत कुछ पाया है  
 पसा, प्यार, मोहुरन, उज्ज्वल सब कुछ  
 दस लाख डालर का बस-वेनेम, बेतर हिलस पर एक  
 शानदार कोठी,  
 दासियों काँ और लाया लोगो के आकर्षण का केन्द्र  
 यह शरीर  
 मैंने अपने जीवन में बहुत कुछ पाया है

सिफ एक छोटी सी इच्छा शेष है  
 कि कोई बिल्कुल अजनबी व्यक्ति  
 बिना मेरे बक बोलेंस और शारीरिक उभारों को  
 अपनी आँखों से टटोले हुए  
 बिना मेरी मुँदरता और शोहरत से प्रभावित हुए  
 बिना जाने कि मैं हालीवुड की रानी मनरो हूँ  
 मुझे एक आइसक्रीम खिलाता  
 या सहज स्नेह से सिफ मेरे गाल थपथपा देता, बस ।  
 अब मैं सो रही हूँ ।।



## शब्द-सैनिको से

जाओ !

ओ मेरे शब्दों के मुक्ति सैनिको, जाओ !

जिन जिन के मन का देग अभी तक है गुलाम

जो एकछत्र सम्राट स्वाध के शासन में पित रहे अभी हैं

मुबह-गाम

घेरे हैं जिनको रुडि-प्रस्त चिन्तन की ऊची दीवार

जो घीते गुग के सस्वारों की सरमायेदारी का गोपण

सहते हैं बेरोश्याम

हम जो तिल तिल कर पिस रहे हैं  
 जहर के प्याले पी रहे हैं, फासियो पर लटक रहे हैं  
 रेल गाड़ियो के नीचे आकर कट रहे हैं,  
 शहीद हो रहे हैं  
 लेकिन हमारी गहादतो को  
 किसी आदश तक पहुँचने ही नहीं दिया जाता—  
 हम सिफ अपने पेट के लिए ही शहीद होना पड रहा है !

हम जो लड रहे हैं, सघष कर रहे हैं  
 लेकिन हमारे सघष  
 किसी महान् उद्देश्य को पकड ही नहीं पाते—  
 हमें महज अपनी रोजी के लिए ही लडना पड रहा है !  
 हम ऐसे धम पीढ हैं जिनके पास कोई सलीब नहीं है !  
 किसी सलीब के लिए तडपती हुई  
 हमारी तपस्याओ, लडाइयो और गहादतों का बढ  
 बया कोई समझेगा ?

## सिर्फ एक शब्द नहीं

‘कामरेड !’

सिर्फ एक शब्द नहीं

यिजली की लाशों रोगनियों को जला देने वाला एक  
स्विच है

जिसे बघाते ही

र ग बिर गी रोगनियों की एक बनार जगमगा उठती है

एक स्विच जो वाल्ट व्हिटमन को मापनीवस्की से

और पागो नेस्टा को नाजिम टिकमत से मिला देता है,

मॅक्सिम गोर्की, हावर्ड फास्ट और यशपाल के बीच  
एक ही प्रकाश रेखा खींच देता है ।

‘कामरेड !’

मिफ एक स्विच नहीं, एक चुम्बन है

एक चुम्बन

जो दो इमाना के बीच की तमाम दूरियों को एक ही क्षण  
म प ट देता है

और वे इसके उच्चारण के साथ ही एक दूसरे से यो धुल-  
मिल जाते हैं

जैसे वे युगा से परिचिन दो घनिष्ठ मित्र हो

एक चुम्बन जो पागो की नीग्रो मजदूरिन

और हिन्दुस्तान के अछूत मेहतर को

एक ही क्षण मे लेनिन के साथ लडा कर देता है !

एक अदना से अन्ना इमान को इतिहास बनाने के

महान उत्तरदायित्व से गौरवाचित कर देता है ।

‘क मरेड !’

सिफ एक चुम्बन नहीं, एक मत्र है ।

जो धोलने वाले और सुनने वाले दोनों को पवित्र कर  
जाता है ।

एक मत्र, जो अन्ना अलग देगो, बर्गों और नस्ला के  
बराटा लोगा को

एक ही मूत्र में विरो जाता है ।

एक रहस्यमय मत्र

जो इमान को आजादी, बराबरी और नाईचारे के लिए

कुरवान होने वाले तात्वा गहीदा के दरवाजे

मयके लिये खोल देता है

श्रीर साधारण से साधारण व्यक्ति उनकी महानता से हाथ  
मिला सकता है।

‘कामरेड !’

एक जलती हुई सिगध ली है

जो एक दिल के दिये से निकलती है

श्रीर हजारों दिलों को दीप्त कर जाती है,

एक तराशा हुआ हीरा है

जिसकी सत्वत चमक में सैकड़ों सपने झिलमिलाते हैं,

विषमता श्रीर भेदभाव के तपते रेगिस्तान का एक मर  
दीप है

जहा आ कर

जुलम श्रीर श्रम का आग में जलते हुए राहगीर

राहत की सास लेते हैं,

एक डूबरे का हीसला बढाते हैं !

## बर्फ पिघलने के बाद भी

कैसे फिराते हो तुम मेरे शरीर पर अपनी अशुक्तियाँ, प्राण ।  
कौन सा जादू भरा है इनमें  
कि कस-कस जाते हैं  
मेरे शरीर के सितार की सारी नसों के तार  
धिरक उठना है  
मेरी नसों में गताश्रितों से सोया हुआ कोई प्राणिक  
सगीत  
समन्दर की अदम्य सहरों की तरह

रणजीत

मंत्रमुग्ध सा तुम्हारी अगुलियों के इशारों पर  
और जाग-जाग उठती हैं  
मेरे लहू का अयाह गहराइयों में घेहोश  
प्रागतिहासिक युग की हजारों कविताएँ ।

कौन सा दब, कौन सी आग नरी है तुम्हारी इन  
अगुलियों में प्राण !

जो सँकड़ों रेगिस्तानों की व्याकुल प्यास  
मेरे रोम-रोम में रस जाती है  
कि जब मेरे अस्तित्व की जड टपरेलाए  
चरम-मुल के तरल बेसुध क्षणों में घुलने लगती हैं  
और मैं तुम्हारी बाहों की अभय देती हुई शाखाओं में  
अपनी गरदन झुलाए हुए  
एक अलसाई हुई लता की तरह खो जाती हूँ  
तब भी मुझे लगता है  
कि अनसाधी घाटियों और पहाड़ों की खवारी बर्फ  
पर पड़े

पहले पद चिह्नों की तरह  
सदियों तक मौन सहती रहूँगी अपने वक्ष पर  
सजो कर रखूँगी  
तुम्हारी अगुलियों से लिखे इन धावों की  
बर्फ के पिघल जाने के बाद भी ।

## इतिहास का न्याय

( प्रातस्की की पुस्तक 'रूसीक्रान्ति  
का इतिहास' पढ़ते हुए )

वे सब जो विजयी होकर लौटे हैं  
जिंदा बचे हैं  
सच्चे हैं, दगाभक्त हैं, महापुरुष हैं !

वे सब शर गये  
— —



झूठे थे, गद्दार थे, दुष्ट थे ।

नीति कहती है

सत्य की हमेशा जीत होती है ।

इतिहास कहता है

जो जीतता है, वह सत्य कहा जाता है ।

## सवेदनाओं के क्षितिज

तुम ठीक कहती हो प्राण !  
सचमुच मैं तुम्हें पूरे दिल से प्यार नहीं करता  
पर मैं पूरा दिल कहा से लाऊ ?  
मैं तुम्हें कैसे बताऊ  
कि जब मेरे दिल का एक हिस्सा  
तुम्हारे प्यार में खोया हुआ होता है  
उसका दूसरा हिस्सा  
एक शत्रुतापूर्ण तूफानी समुद्र में

अपनी मजिल की ओर बढ़ते जा रहे  
 एक छ्वाटे से जहाज के साथ मडरा रहा होता है  
 और वह जहाज है  
 साम्राज्यवाद के समुद्र में नहीं डूबने का सकल्प लिये  
 हुए ब्यूबा ।

और जब मैं तुम्हे अपनी गोद में लिटाये हुए  
 तुम्हारे केशों में अपनी अ गुलिया फिरा रहा होता हूँ  
 मेरे विचार हाथों में बढूकें लिये  
 वियतनाम के घने जंगलो में घूम रहे होते हैं  
 और अमेरिका हवाई जहाजों से बरसाये जा रहे  
 जहरीले बमों की फिरकें

मेरे चेहरे को लहू लुहान कर जाती हैं !

मैं तुम्हें पूरे दिल से प्यार कमे कर ?

कि जब मेरे कंधे पर सिर रख कर तुम सो रही होती हो  
 और कहती हो

कि इस तरह तुम्हारे कंधे पर सिर रख कर सोना मुझे  
 इतना अन्धरा लगता है

कि चाहती हूँ कि जन्म जन्मांतर तब इसी तरह पडी रहूँ  
 तभी मेरी छाँसों से सुदूर अतीत का एक दृश्य कौंध  
 जाती है

हायड फास्ट के उस आदि विद्रोही स्वाटकत का दृश्य  
 और यह हजार गुस्तामों की साँसें मेरे दिमाग में घिटी  
 जानी है

और तुम्हारे मामल गालों की झुंझी हुई मेरी अ गुलियों में  
 राइफल का बोल्ट का एक कटोरा स्पष्ट जागने लगता है !

तुम ठीक कहती हो

सचमुच मैं तुम्हें कभी पूरे दिल से प्यार नहीं कर पाता

लेकिन प्यार ही दया  
कोई खुशी, कोई गम भी तो मं पूरे दिल से नहीं मना  
पाता

मेरी हर खुशी पर सकड़ो अवसादों के साये हैं  
और मेरे हर अवसाद की धारा में सकड़ो आशाओं की  
खिड़किया

कि जिस दिन मैं 'राहुल' के प्रकाशन की खुशी मना  
रहा था  
साम्राज्यवाद का जूआ तोड़ फँकने वाले दो पड़ोसी देशों  
की सेनाए

हिमालय की बर्फ को इंसानों खून से रग रहीं थीं ।  
कि अपनी नीकरी छूटने की लबर की उदासी  
रूने नाजिम हिक्मत की कविता 'तुम्हारे हाथ और यह  
झूठ' से काटी थी  
और कई महीना की बेकारी और भटकन के बाद  
जब मुझे फिर काम मिला  
अल्जीरिया के स्वतंत्रता आन्दोलन को  
सोक्रेट आर्मा आरगेनाइजेशन की हथियार प्राप्त कर  
रही थी ।

और उस दिवानी की गत तुम्हें याद है ना ?  
जब हम मोमबत्तिया की कनारा में मिले हुए बच्चों की  
तरह खुश हो हो कर  
पुनर्पडिया और पटाए छोड़ रहे थे  
मैं एनाएन उदास हो उठा था  
क्याकि एक पटाए की आशा में मुझे उन मोतिया की

आवाज के करीब ले गयी  
जिनसे बगदाद की सड़को पर मेरे अरमानों के सीने दागे  
गये थे ।

तुम ठीक कहती हो कि मैं  
लेकिन मैं क्या करूँ ?

मेरी शान ने मेरी संवेदनाओं के क्षितिज कितने फँसा  
दिये हैं

कि दुनिया के कोने कोने में मैं अपने दोस्तों और दुश्मनों  
को देग रहा हूँ

मेरे दोस्त जो मेरे दुश्मनों से एक निर्णायक लड़ाई में जूझ  
रहे हैं

और पेरिस के किसी चौराहे पर फहरता हुआ मजलूमों  
का एक बुलन्द इरादा

जजीवार में उठी हुई मुट्ठियों का एक जुलूस

अपान में रगभेद के तिलाफ कडकता हुआ  
एक नारा

मुझे इस तरह रोनाचिन कर जाता है

जिस तरह महीनों की गुनाई के बाद तुम्हारा पहला  
आगिलन ।

और टोकियो में एक मजबूरन दूटी हुई हडताल

लियोपोल्डिन में एक गिरफ्तारी

सिंगापुर में उठी हुई गदनों का एक वापस लिया  
हुआ आन्दोलन

मेरे दिल पर अस्तान का इतना बोझ रखा जाता है

कि मैं घटों तक बिगो में बान भी नहीं कर पाता ।

## भूकम्प

तेजी से बढ रहा समय है  
और कलेण्डर पिछड रहे हैं  
काफी आगे निकल गया है  
जल्दी जल्दी कदम उठाने वाला नया वमत  
और घब पीटे-पीटे हाँक रही है भारी कदम बसत  
पचमी ।  
आँक नहीं पाता यह तारीख-माहों-बरगों का ढाँचा  
समय चाल को ठीक ठीक से

सोमवार को अभी कलेण्डर सत्रह ही तारीख बताता  
लेकिन वह अठारह, बीस, तीस, तक पहुँच रही है !  
ऊपर से ज्यों का त्यों दिखता अण्डे का यह खोल  
कि जिसके भीतर का वह जीवन अ क्रुर  
अपनी गति में

खोल की सारी जड सीमायें पीछे छोड़ चुका है !  
और खोल जो अब तक उसका कवच था  
अब जजीर बन गया ।

लेकिन देख रहे जो केवल मात्र खोल की मजबूती को  
और नहीं जो घूँस रहे हैं उसके भीतर उगती एक नई  
ताकत को

जिस दिन वह टूटेगा

बहुत चौंक जायेंगे

घबरा कर पूछेंगे

एकाएक अचानक यह भूकम्प कहीं से आया ?

## आइकेरस

मेरे नये और नहे साथियो !  
तुम जो अपने अपने क्रीट द्वीपों के कदखानों से  
उड़ नें भरने के लिए तयार सडे हो,  
और मुझसे मेरे अनुभव पूछ रहे हो  
मैं निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ  
कि तुम्हें क्याचनाऊ ?

कभी सोचता हूँ



मैं तुम्हें बताऊँ

कि कितने कमजोर होते हैं मानवीय साहस के पल  
और कितना ऊँचा है वह आकाश ।

कितनी गम होती है यथाय के सूर्य की किरणें  
और कितना द्रवणशील होता है वह आदमों का मोम  
जिससे हम अपने पल अपने शरीरों से जोड़ते हैं ।

कभी सोचता हूँ कि तुम्हें बनाऊँ

कि हर ऊँची उड़ान का अंत  
पिघले हुए मोम और दूटे हुए डनों में होता है  
कि वे बाह

जो अपनी सीमाओं में आकाश को घेर लेना चाहती हैं  
गिर कर समुद्र में विलीन जाती हैं ।

लेकिन फिर मोचना हूँ

कि यदि यह मय कुट्ट निश्चिन्त भी हो

यदि मोम का पिघलना और पत्ता का दूटना

एक गालभोग मत्त भी हो

तो भी मुझे क्या अधिभार है

तुम्हारे वसतमानों हुईं बाहों को निराण करने का,

तुम्हारे फलकते हुए डना का विश्राम छानने का ।

क्या अधिभार है उस उड़ान के आनंद में तुम्हें वचित  
रखने का

जो गायद हर परिणाम के बावजूद

जिंदगी को सभने यही मानना है ।

फिर क्या मात्रुम

गायद तुम्हारे डो गेरे डना में गगाग मजबूत हो

तुम्हारा सूप उतना प्रचण्ड न हो  
तुम्हारा आकाश तुम्हारी उड़ान के प्रति उतना क्रूर न हो  
गायद तुम्हारी बाह  
आकाश को अधिक देर तक घेर कर रख सकें ।

इसलिए

मेर नये साथियो !

मेरी शुभकामनाए तुम्हारे साथ हैं

जरा सूरज का ध्यान रख कर उडना ।

## बहुत शुक्रगुजार हू

बहुत शुक्रगुजार हू तेरा, ऐ मेरे वतन कि अभी तक म  
नूखा न मरा, पागल न हुआ, जकड़ा न गया हथकड़ियो से ।

## तुम नहीं हो

तुम नहीं हो

लेकिन क नरे में प तो हुई है तुम्हारे चेहरे को गोरी नाजुक  
पुगवू

कि शचान्त काई पुस्तक पढत पढते

अपने चेहरे के बहत नजदीक महसूस होता है तुम्हारा  
चेहरा

और मैं हठातु अपनी गन्त पर मैं

तुम्हारी मामों का गुन्गुलाना दृष्टा स्पग पीछन लगता है ।

तुम नहीं हो

पर कागज की रग बिर गो नाओं की तरह

तुम्हारे हल्के-पुल्के चुम्बन

मेरे कमरे की हवा में तर रह हैं ।

रोशन दाना की राह में मेरे पाम चने आते हैं कभी

दो नहे-नह सफेद बूतल की तरह

पप फडफडाते हुए तुम्हारे आलिंगन ।

घोंर घीरे से दरवाजे का पदा उठा कर झाक जाते हैं

अकसर

तुम्हारे गम से ताल, समपण में पिघल हुए इरादे ।

तुम नहीं हो

लेकिन तुम्हारे गरीर की ऊष्मा

अब भी मेरे विस्तर की गम रक्खे हुए है

अब भी बिछा हुआ है मेरी कितानों पर तुम्हारा स्पर्श

बिखरी हुई गुलाब की ताजा पखुरियों की तरह ।

## इतिहास का दर्द

क्या, यह दुनिया कुछ कम उलझन भरी होती !  
प्यार का विरोध सिर्फ गलत परम्पराएँ ही करतीं या  
समा हो

सब ही दुःमनी सिर्फ झूठ से ही होती  
उजाल के हथियारों से हथियार भिड़ाए हुए  
सिर्फ अधेरा ही मडा हाता

और इकताव की गिनाफ्त सिर्फ प्रतिक्रिया ही करनी,  
लेकिन यहा तो प्यार क गिस्ताफ प्यार मडा है

एक तरह के प्यार के खिलाफ दूसरी तरह का प्यार  
और परम्परा और पैसा उसके पक्ष में भी है और विपक्ष  
में भी !

उजाले के सामने उजाला तना हुआ है

गुलाबी उजाले के सामने लाल उजाला  
और काले अंधेरे का विरोध नीला अंधेरा कर रहा है !  
सच के खिलाफ सिर्फ झूठ ही नहीं

एक दूसरा सच भी है  
और इकलाव के मुकाबले में सिर्फ प्रतिक्रिया ही नहीं  
एक दूसरी तरह का इकलाव भी खड़ा है !  
कान, यह दुनिया कुछ कम जटिल होती  
और हमें एक इकलाव के लिए दूसरे इकलाव की  
एक प्यार के लिए दूसरे प्यार की  
और एक सच के लिए दूसरे सच की  
मूलासिफत के बदनाम कृतव्य का बोझ  
न उठाना पड़ता !

## झाकड़ो का व्यापार

( द्वितीय महाशुद्ध सम्बन्धी एक फिलम

लागस्ट ३' दख कर )

इमान नहीं  
मर्याए तउ रही है ।  
शास्त्राग्रा मे मर्याए गिनी हुई है  
पून मे पून नहीं,  
मपनों से सपने नहीं,



चाहों से चाहे नहीं  
तनखाहा से तनखाहें भिड़ी हुई हैं ।

घड घडाती हुई मशीनगनों  
तोपों और धमकपक त्रिमानों का चारा  
इमान नहीं,  
आकडे हैं !  
दहाइया, सरुडे और हजारे !  
एक नहीं—  
एक जो कोई व्यक्ति है  
किसी गांव या नगर या निवासी  
किसी घर का चिराग  
किसी बाप की लाठी  
किसी मा का गुलाब  
किसी मामूख तुतलाहट की उम्मीद  
किसी बेनींद रात का ख्याल ।

इंसान नहीं  
सख्याए मर रही हैं,  
घायल हो रही हैं,  
बढ़ रही हैं, घट रही हैं,  
भाग रही हैं, डट रही हैं  
सख्याए की ही जीत है, हार है  
गुन क्या घर ?  
मिफ गोफजा का रेफेरे ह,  
ख्यापार है ।

## इसका मैं क्या करूँ ?

प्रकृति में प्रतिबिम्बित किमो परोप सत्ता में मेरा विश्वास  
नहीं

पर मेरे भीतर बसा हुआ वह प्रकृति का भाग  
इसका मैं क्या करूँ ?

हिनारे लने लगता है मेरे भीतर का पानी  
मम-दर की अदम्य लहरों के जालाहल में  
उमट-उमट उठती है मेरी रक्त में बसी हुई प्राण

कुहरीते सपेरी में पूरु से निकलते हुए सूरज के  
साथ-साथ

और जब भी देखता हूँ  
छान्नी गलों में नदी के चमकते हुए कण  
साट-पोट ही जाना चाहती है उनमें  
मेरे भीतर की पृथ्वी ।

उमग उमग आता है मेरे अतस् का आकाश  
तितम्बर की शर्मों के रंग बिरंगे वादल चित्रों में  
विचरते हुए ।

जाग उठती है मेरे भीतर सायी हुई गुण्डूए  
बसती हवाआ की प्रमदा सुगंधों के संगीत में ।  
और जब देखता हूँ  
सोने के एर समूह की एक माय आर्द्रोचित हात हुए  
एक कतार में कवायद करते हुए  
एक लय में कुदालें चलते हुए  
और एक स्वर में गुंजाए उठते हुए  
तो मचल मचल उठन। है मेरा दिल  
उनमें धुल मिल जाने के लिए  
जैसे बहुत देर से बिटुडा हुआ कोई यन्त्र  
अपनी मा को देख कर  
उतकी गाद में जाने को मचनना ह ।

इस समार में अभिपन्न किमी अज्ञान चेना मे मेना  
विश्वास नहीं  
पर इस समार के एक एक ग ग के माय  
म जो कोई गहरी आंतरिक एका महसूस करता हूँ



कोई है ?

घोसियों मजिल की

एक फौलाद और कथीट की गगन चुम्ब्यो बिल्डिंग पर  
बठा है एक दानव

डालरा की एक विंगाल धली पर

हाइड्रोजन बम का सिर ।

फँस रहा है लोहे के हाथों से

बम्बार हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर

गोरे और बाने जरवरीद गुलामो के हुनूम



## नये आयाम

घब सिरुं जमीनें घं र मकान ही नहीं,  
जुलूम और धाबोलन भी बँचे और खरीवे जाते हैं ।  
गहने ही नहीं,  
आजारियां और आन्तियां भी गिरवी रखी जाने लगी हैं ।  
घब सिफ गेट्रे और चावल ही नहीं  
नीतियां भी उधार ली और दी जाती है ।  
बह जमाना गया  
जब बलई सिफ बतनी पर ही होने लगी





## प्रतिश्रुति का गीत

मैं आज के युग में जी रहा हूँ

और आज की

—एकदम आज की—सक्रांति होत रहा हूँ

पर मैं अमगतियों और विद्रवनाओं के,

विशेष और आत्महत्या के गीत को गाऊँ ?

जब कि मेरे आगपास सब कुछ ख खेगा ही नहीं है

तमाम दूरियाँ ब बंधन मेरे माना दिया

अभी मेर त्रिवे बंगाने नहीं हुए हैं

सपने घर में सभी चाउचाइए गरी हवा है है  
मरी गरी सभा मेरे लिये सजराबी गरी बना है  
मेरे बोग सभी मग भाग समता है ।

घर गरी कि मुने कभी सजरागत गरी गनाग  
पर सपिजगर म जव भी ग गरा है  
घर । सजमेवत क ।

सपने साधिया क कथा पर टार मरना है  
शास म पही एक पुनक की तरह  
सपनी प्रिया की घांगा म भी मरना है

स्वच्छ सरोवर म दूधकियां सगात एक  
एक जलपत्ती की तरह  
सपने विद्याधियो के नेहों पर दिग्ग सस्ता है  
ममों की किसी दोपहर म  
जस से मुर्ग धन ठण्ड पागी की तरह  
शौर सपनी शितावा में पत्रा पर घिलेर सक्ता है  
मुनाथ की ताजा परुरिया की तरह  
या गयी लहरा के आकाश में उडा सक्ता है  
एक नहे से सफेद कबूतर की तरह ।

शौर जव यह कुछ भी सम्भव न हो  
ता किसी भी जाते हुए राहगीर के पल्ले के बांध  
सक्ता है, उसे  
रोटी गौर आचार की एक छोटी सी पोटली की  
तरह !

तीस मुझे सिता हुई दियामताइयां से मसहाय कसे तगें ?  
जव कि म उ ह देखता है  
लोगो के लिये राडते हुए

बिना दूटे जेलों में सड़ते हुए ।  
 दुनिया मुझे सिफलिस से घजपजार्ड हुई  
 मवाद चुग्राती हुई  
 मुट्ठियों में अपनी माँत की विरासत बाध कर जाती हुई  
 कैसे दिखाई दे ?  
 और क्यों लगे फुंसियों की तरह आवाग के तारे  
 जब कि फुंसियों और बीमार मनों—  
 बोनो के ही लिये अस्पताल मौजूद हैं ?

मैं विशेष के चिद्रूप और मृत्यु के सत्राम की कविताएँ कैसे  
 लिखू ?

जब कि सब घाता के बावजूद  
 मेरा देश अभी अमेरिका नहीं हुआ है  
 मेरी धरती अभी चमगादड़ों की दुग्धिन गुफाओं  
 और वास्द के जहरीले धुएँ से घुटे खडहरों में नहीं बदली  
 है  
 और न आकाश में मकड़ियों ने ही अपने जाले बनाये हैं

मेरी सभी हवाओं में अभी जहर नहीं घुला है  
 और न मेरी नदियाँ  
 बिलबिलाने हुए कीड़ों से भरी नावदानों में ही बदली है  
 पागलगाँव और चक्रे अभी मेरे नगरों में ही हैं  
 मेरे नगर अभी पागलखाना और चक्रे में नहीं गये हैं  
 साग भूयों तो मरत हैं  
 पर अभी गमगात में ही तीजाकर जलाये जाते हैं  
 गमगात अभी घरा में नहीं उतर है  
 मनुष्यों और मनुष्यों के बीच अभी बहुत बृद्ध गेप है

पूरा सभी निग । है

य ॥ सभी सहायता है

मेरी सांगणम सभी स्यात सा उताना है ।

म विद्या , ॥ मा घोर दूरे हुए स्थिति का गान कम  
गाऊ ?

जब कि म स्यात स्थिति का हर दरार

सपना दुगा दन का मिट्टी म पूरा मरना है

घोर सपने मा की हर चिन्ता को

सपना इतनी सागा क हाट से जाग मरता है ।

यह त्यों कि म सपना परियण का अमगतिमा क प्रति  
प्र पा है

या कि म उनकी रिपतामा का दगरा नहा चाहता

त्यों, म उल दसता है

पर म सिप उह ही त्यों देसता

और न उनके गीरव गायन म ही सपने कवितामा की  
लगाता

चाहता हूँ

म उन रिपतामा की लपटा के बीच

प्रह्लाद की तरह सिर उठाते हुए सी दय को भी वेसता  
हूँ ।

और उम सगति को भी

जो इत असगतिमा की काई पाउ पर शाश जाती है ।

म सपने चारा और फली हुई सन्नाति से नहीं,

उसके बीच से अगने नक्श उभारती हुई सन्नाति से प्रति  
श्रुत हूँ ।

अस्तित्व की चढ़दगियो के रेगिस्तान का नहीं

उसके नीचे वहती हुई मायकना की उम अत सलिला का  
कवि हूँ

जो पाताल तोड़ बुध के रूप में फूट पडना चाहती है ।

मैं उसकी मुक्ति के लिये सकल्पित हूँ ।













